[redacted]

सम्मान **जेहन में आज भी जिंदा हैं मूलचंद जैन**

...बाकी यही निशां होगा

सेनानियों ने किया था अंग्रेजों का लगान बंद

आज समाज नेटवर्क

करनाल। शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का बाकी यही निशा होगा।। देश को स्वाधीनता दिलाने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की श्रद्धा में देश आज भी नतमस्तक है। एक ओर यहीं शहीद-ए-आजम भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद की क्रांतिकारी गतिविधियों को यहां से बल मिला तो वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी हुकूमत को लगान न देने की शुरुआत इसी भूमि से हुई। सेनानियों के पराक्रम की बदौलत यहां से भागे गोरों ने फिर भारत माता की ओर आंखें उठाकर नहीं देखा। आजादी के दो सौ रणबांकुरों ने लहू से भारत की मिट्टी को सींचा है। उन रणबाकुंरों में ऐसे ही एक थे गांधीवादी विचारक बाबू मूलचंद जैन। उनका जन्म 20 अगस्त 1915 को हुआ था। उन्होंने 1940 में सत्याग्रह आंदोलन की ऐसी अलख जलाई कि अंग्रेजों की हवाइयां उड़ गई। स्वतंत्रता सेनानी रणबीर सिंह हुड्डा के नेतृत्व में उन्होंने गिरफ्तारी दी। देश के प्रति उनके भाव देखकर 1942 में उन्हें स्थानीय कचहरी में नजरबंद करके पुरानी केंद्रीय जेल मुल्तान भेज दिया गया। यहां के असंध, जलमाना, गोंदर, डाचर, सालवन और बल्ला के किसानों को कर न देने की बड़ी कीमत चुकानी पड़ी, इसके बावजूद सेनानियों ने घुटने नहीं टेके। इन क्षेत्रों से लाला जी का विशेष प्रेम था। आजादी के बाद उन्होंने उक्त गांवों में सर्वाधिक समय व्यतीत किया। आजादी के बाद वर्ष 1957 में वे कैथल सीट से जीतकर लोकसभा पहुंचे। उनकी बदौलत दर्जनों शहरों में स्मारक व संग्रहालय बने। 1931 में गोहाना हाईस्कूल से 10वीं की परीक्षा में उन्होंने पूरे स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसी वर्ष मार्च में सरदार भगत सिंह और सुखदेव को फांसी दी गई। यह सब उन्होंने सहन नहीं किया और जंग-ए-आजादी में कूद पड़े। इसके बाद उन्होंने लाहौर से बीए पास किया। एलएलबी करने के बाद जैन ने गोहाना से वकालत की शुरुआत की। देश में कई अहम पदों पर रहते हुए स्वतंत्र भारत के निर्माण में उन्होंने अतुलनीय योगदान दिया। 12 सितंबर 1997 को उन्होंने आंखे मूंद ली।

जवाहर लाल नेहरू के साथ लाला मूलचंद जैन।

बंसीलाल ने मानी गलती

1975-77 तक इमरजेंसी के दौरान उन्हें जेल में रहना पड़ा। उन्हें पेरोल पर जाने को कहा गया, लेकिन इस निर्णय को न मानते हुए उन्होंने 19 महीने जेल में ही बिताए। उनका स्पष्ट कहना था कि प्रजातंत्र खत्म कर परिवारवाद लाया जा रहा है। वे इसे सहन नहीं करेंगे। बंसीलाल ने एक सम्मेलन में साफ किया था कि लाला मूलचंद जैन को उन्होंने जेल में डाला, लेकिन सत्ता में आने के बाद भी उन्होंने उनका बुरा नहीं चाहा।

Downloaded from moolchandjain.org